

डॉ. अगस्त कोकेल, क्रॉनिकल्स, सत्र 4, यहूदा का शेर

© 2024 गस कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. ऑगस्ट कोकेल और इतिहास की पुस्तकों पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 4 है, यहूदा का शेर।

अब हमारे पास हेब्रोन और राम के माध्यम से पेरेस के वंशज के रूप में इज़राइल के इतिहास में डेविड का नाम दर्ज है।

तो, हम जानते हैं कि जेसी, उसका पिता कौन है और वह कौन था जिसे परमेश्वर ने अभिषिक्त किया और यहूदा का सिंह बनने के लिए चुना, जो वास्तव में उत्पत्ति अध्याय 49 में यहूदा का उल्लेख है, जो हमें जनजातियों के इतिहास का थोड़ा सा हिस्सा देता है। और इसलिए यहाँ हमारे पास यहूदा के अभिलेखों का एक छोटा सा समापन इतिहास है। यहूदा के अभिलेखों का यह समापन इतिहास अध्याय दो में दिए गए कुछ नामों से शुरू होता है।

अगर हम वाकई इसराइल के इतिहास में दिलचस्पी रखते हैं, तो बेशक, हम इस बारे में थोड़ा और विस्तार से जानना चाहेंगे। लेकिन यहूदा के इन प्रतिष्ठित परिवारों को इतिहासकार द्वारा कोई सीधा वंशावली लिंक नहीं दिया गया है, बल्कि कुछ हद तक दूर का लिंक दिया गया है। कालेब के परिवार हैं, जिनकी तुलना हम 1 इतिहास अध्याय दो के अंत में हेब्रोन के आसपास के क्षेत्र में रहने वाले हेसियन के बेटों से कर सकते हैं।

ये पहले दो श्लोक हैं। और फिर एताम है, जिसका उससे संबंध है, वह कालेब का दूसरा बेटा है, और आशेर, जो टेकोआ का पिता है। टेकोआ यरूशलेम के दक्षिण में एक प्रमुख और प्रसिद्ध गाँव बन जाता है, जो अपने प्रतिष्ठित लोगों के लिए जाना जाता है और कभी-कभी ज्ञान से जुड़ा होता है।

फिर, अन्य वंशावली से वास्तव में असंबंधित, हमें जाबेस से परिचित कराया जाता है। जाबेस को कोई वंशावली लिंक नहीं दिया गया है। यह इतिहासकार के पास मौजूद एक रिकॉर्ड है।

और इतिहासकार के लिए जाबेस की कहानी बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है। इसका इतना महत्वपूर्ण होने का कारण आंशिक रूप से उसके नाम की व्युत्पत्ति है, जो हमें उसके जीवन के बारे में कुछ बताती है। अब, मैंने इस चार्ट पर जाबेस का नाम दिया है।

जाबेस, मैंने स्वरों को वहाँ नहीं रखा है, लेकिन जाबेस नाम जिस तरह से दिया गया है। और यह वास्तव में दूसरे शब्द पर एक नाटक है। उत्पत्ति की पुस्तक में, हमारे पास क्रिया एतज़ेव है। और क्रिया एतज़ेव उस अभिशाप को संदर्भित करने जा रही है जो हव्वा पर आता है, जब वह साँप के शब्दों पर ध्यान देती है और विश्वास करती है कि किसी तरह वे देवताओं की तरह बन सकते हैं। और किसी न किसी तरह, वे यह जानने की स्थिति में हो सकते हैं कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है, या यह निर्धारित करना कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है। जिस भी तरह से हम उत्पत्ति

अध्याय 3 में उस रूपक को लेना चाहते हैं। इसलिए हव्वा पर निर्णय यह है कि आपको वास्तव में वह ज्ञान प्राप्त नहीं होगा जो आपको लगता है कि आपको प्राप्त होगा।

आपको लगता है कि आप भगवान की तरह होंगे, और आप यह निर्धारित कर सकते हैं कि क्या अच्छा है या आप जान सकते हैं कि क्या अच्छा है, लेकिन वास्तव में, आपको जो मिलने वाला है वह एत्जेव है। एत्जेव का मतलब है दर्द। अब यह शारीरिक दर्द के संदर्भ में दर्द नहीं है।

यह जीवन की सबसे महत्वपूर्ण बात के संदर्भ में काफी दर्दनाक है, अर्थात् मानवीय रिश्तों का क्या होने वाला है। और ईव के जीवन में, उत्पत्ति की कहानी में, हम देखते हैं कि यह दर्द लगभग तुरंत ही फलित होता है क्योंकि उसके बेटों में से एक, सबसे बड़ा, कैन, उसके दूसरे बेटे, जो कि हाबिल है, को मार देता है। अब, मैं ईमानदारी से कल्पना भी नहीं कर सकता कि एक माँ के लिए यह कैसा होता है जब उसका अपना बेटा अपने भाई को मार डालता है।

एत्जेव की कहानी है। बच्चे होने का मतलब है कि उसे जो होगा वह दर्द होगा। इसलिए, इस बेटे का नाम इस शब्द पर एक व्यंग्य के रूप में रखा गया था, और उसे एत्जेव कहने के बजाय, उसे एवेस [1 इतिहास 4:9ff] कहा गया था।

यहाँ सिर्फ दो शब्दों का थोड़ा-सा बदलाव है, लेकिन दो आयतों में जो वर्णन है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इसका क्या मतलब है। इस आदमी ने बहुत सी ऐसी चीज़ें झेलीं जो गलत थीं। हो सकता है कि उसने बहुत सी ऐसी चीज़ें भी की हों जो गलत थीं।

लेकिन वैसे भी, उसे यह प्रतिष्ठा मिली कि वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसने दर्द दिया या दर्द सहा, जिसने बहुत नुकसान उठाया। और उसने जो किया वह प्रार्थना है। इतिहासकार के लिए, ऐसा कुछ भी नहीं है जिसका समाधान नहीं हो सकता है यदि आप उस राख को अपना वचन, प्रभु मानते हैं।

और अगर आप प्रार्थना करते हैं। तो जाबेस प्रार्थना करता है, और उसकी प्रार्थना है कि उसका क्षेत्र बढ़ाया जाए। इसलिए, इस दर्द और इस सारी परेशानी को झेलने के बजाय जो वह अनुभव कर रहा है, वह प्रार्थना करता है कि प्रभु उसे आशीर्वाद दें।

इतिहासकार का कहना है कि प्रभु ने उसकी प्रार्थना सुनी, और वह व्यक्ति जाबेस, जिसे पीड़ा और हानि का सामना करने वाले और हर गलत चीज को सहने वाले के रूप में जाना जाता था, प्रभु की खोज के माध्यम से, धन्य हो गया और समृद्ध हो गया। अब यह इस वंशावली में है, इसलिए नहीं कि वंशावली संबंध है, क्योंकि ऐसा कोई संबंध नहीं है। यह इस वंशावली में केवल धार्मिक उद्देश्यों के लिए है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि इतिहासकार के पास इस व्यक्ति के बारे में एक ऐसा अभिलेख है जिसके बारे में हम किसी अन्य संदर्भ से नहीं जानते। लेकिन उसका कहना है कि किसी भी समय, एक व्यक्ति या लोगों का समूह प्रभु की तलाश कर सकता है, और वह उनके दर्द को दूर कर सकता है, और वह उनकी सीमाओं का विस्तार करेगा। अब, यहाँ मुझे इतिहासकार के बारे में हमारे अपने धार्मिक अनुप्रयोग के संदर्भ में एक बात कहनी है।

उत्तरी अमेरिका महाद्वीप में, खास तौर पर, हम अक्सर ऐसी किसी चीज़ से निपटते हैं जिसे शिथिल रूप से समृद्धि सुसमाचार के रूप में संदर्भित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, आशीर्वाद का मतलब है कि ईश्वर आपको समृद्ध करेगा और आपकी सीमाओं को बढ़ाएगा। आप जानते हैं, हम इस बात पर ध्यान केंद्रित नहीं करते हैं कि यीशु आशीर्वाद के बारे में क्या कहते हैं।

धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि उन्हें सांत्वना मिलेगी। आप जानते हैं, परमेश्वर का राज्य दूसरे स्तर का है। और इसलिए जो आशीर्वाद हमें मिलता है वह दर्द के माध्यम से आ सकता है।

यह ईसाई जीवन की एक बहुत बड़ी सच्चाई है। लेकिन हमारे भीतर एक धारा रही है जिसने कहा है, नहीं, आशीर्वाद का मतलब हमेशा समृद्धि होना चाहिए। अब, बेशक, आशीर्वाद का मतलब समृद्धि है।

और परमेश्वर उन लोगों को आशीर्वाद देता है और समृद्ध करता है जो उसे खोजते हैं और जो उस पर भरोसा करते हैं। इसका यह मतलब नहीं है कि वे शोक करने वालों में से नहीं हो सकते। वास्तव में, कभी-कभी हमें शोक के अनुशासन का अनुभव करने की आवश्यकता होती है ताकि हम अपनी मानवता और अपनी कमज़ोरियों को समझ सकें, कि हम अपनी सीमाओं को समझ सकें, और जान सकें कि हमें परमेश्वर पर निर्भर रहना है।

अब, यह वास्तव में इतिहासकार का मुद्दा है। लेकिन वह यीशु का खंडन नहीं कर रहा है। वह कह रहा है कि हम इंसान हैं।

और हम अकेले अपने दर्द पर काबू नहीं पा सकते। हमें अकेले ही अच्छे चरवाहे की ओर मुड़ना होगा। हमें परमेश्वर की ओर मुड़ना होगा और उसे खोजना होगा, और वह हमें सांत्वना देगा।

अब, ईश्वर द्वारा हमें सांत्वना देना हमारी सीमाओं को बढ़ाने के साथ आ सकता है, जो कि इतिहासकार यहाँ कहते हैं, जिसका यह मतलब नहीं है कि यही एकमात्र तरीका है जिससे ईश्वर हमें सांत्वना देगा। दुर्भाग्य से, समृद्धि सुसमाचार नामक किसी चीज़ को कभी-कभी इस तरह पढ़ा जाता है मानो यह हमेशा ईश्वर की इच्छा है। हमारे लिए ईश्वर की इच्छा है कि हम समृद्ध हों।

और इसलिए, अगर हम ईश्वर की तलाश करेंगे, तो हम समृद्ध होंगे। संभवतः इस संबंध में सबसे प्रसिद्ध पुस्तक ब्रूस विल्किंसन की यह पुस्तक थी। एक छोटी सी पुस्तक को पढ़ने में आपको लगभग 10 मिनट लगते हैं, जिसमें वह जाबेज़ की प्रार्थना के बारे में बात करता है, लेकिन यह एक समय में किसी तरह की बेस्टसेलर बन गई।

क्योंकि यह कुछ ऐसा है जिस पर हम विश्वास करना चाहते हैं। हम विश्वास करना चाहते हैं कि परमेश्वर द्वारा हमें सांत्वना देने का अर्थ है कि वह हमारी सीमाओं को बढ़ाएगा, और वह हमें समृद्ध करेगा। बेशक, इतिहासकार ने परमेश्वर के आशीर्वाद को इसी तरह से दर्शाया है।

यह आने का एक तरीका है। इतिहासकार का कहना है कि आपको भगवान पर भरोसा करना होगा। उसका कहना यह नहीं है कि भगवान चाहते हैं कि हम समृद्ध हों।

उनका कहना हमेशा यही होता है कि आपको यह जानना सीखना होगा कि अगर आप ईश्वर पर भरोसा नहीं कर रहे हैं, तो आप वास्तव में नुकसान में हैं। इसलिए, इसका परिणाम यह हुआ कि ब्रूस विल्किंसन ने यह संदेश लिया कि ईश्वर हमेशा चाहता है कि हम अफ्रीका के देश में समृद्ध रहें, दक्षिण अफ्रीका और जिम्बाब्वे के बीच, एक छोटा सा देश, जिसमें वह अनार्यों और बच्चों की मदद करने की कोशिश कर रहा था, और उसके पास यह एकड़ जमीन थी, और उसने वास्तव में सिखाया कि यही सुसमाचार है। कहानी बहुत ही दुखद रूप से समाप्त होती है, क्योंकि राजा ने पूरी परियोजना को मंजूरी नहीं दी।

चर्च बहुत निराश हो गया। वास्तव में, ब्रूस विल्किंसन खुद बहुत टूट गया क्योंकि, अनिवार्य रूप से, उसने इतिहासकार के संदेश को कुछ ऐसा बना दिया था जो इतिहासकार कहना नहीं चाहता था। इतिहासकार कहना चाहता था, आपको ईश्वर पर निर्भर रहना होगा। आपको अपनी मानवता की सीमाओं को जानना होगा।

ऐसा नहीं है कि आप भगवान को बताएं कि उसे क्या करना चाहिए, और आप जानते हैं कि भगवान क्या करने जा रहे हैं। यह इस तरह से काम नहीं करता है। इतिहासकार का कहना है कि भगवान पर भरोसा रखें।

और परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद देगा, जैसा उसने याबेस को दिया था, जिस तरह से परमेश्वर आशीर्वाद देने का निश्चय करता है। इसलिए, वहाँ उस छोटे से धार्मिक बिंदु को देने के बाद, इतिहासकार कालेबियों के बारे में बात करता है, जो हेस्रोन के पुत्र नहीं हैं, और केनिज़ी लोग। ये वे दूसरे समूह हैं जिनके बारे में आप यहोशू की पुस्तक से अधिक जानते हैं, येवुना के पुत्र हैं।

और वे, आप जानते हैं कि कैसे उनकी बहू अकसा ने अपने शहरों के लिए पानी की मांग की, और इसी तरह की अन्य बातें। लेकिन फिर ये यहूदा के कुछ प्रतिष्ठित समूह बन गए, जिन्हें इतिहासकार 16 से 23 में सूचीबद्ध करने जा रहा है। इतिहासकार फिर शिमोन के बारे में बात करने के लिए आगे बढ़ता है।

वह आंशिक रूप से शिमोन के बारे में भी बात करता है क्योंकि शिमोन का कभी अपना क्षेत्र नहीं रहा। शिमोन हमेशा शहर ही रहा है। वे यहूदा के क्षेत्र के भीतर के शहर थे।

वे आम तौर पर अपने तरीकों में युद्धप्रिय और आक्रामक होने के लिए जाने जाते थे। और इतिहासकार ने इसके दो उदाहरण दिए हैं। एक हिजकिय्याह के समय का है, जब वे पश्चिम की ओर पलिशतियों के क्षेत्र में फैल गए थे।

वह एदोम के क्षेत्र में एक और बिंदु देता है, जहाँ वे दक्षिण और पूर्व की ओर फैलते हैं। इसलिए, शिमोन की जनजाति, हालांकि उसके पास कभी भी अपना पूरा क्षेत्र नहीं था, एक जनजाति है जो समृद्ध है, और एक जनजाति है जो यहूदा और अन्य जनजातियों के भीतर बहुत अधिक है। अब यहाँ पर इतिहासकार हमें यह समझाने के लिए आता है कि हमें यहूदा से क्यों शुरू करना चाहिए, क्यों यहूदा शासक जनजाति है।

उनका स्पष्टीकरण यह है। रूबेन ने समय से पहले जनजातियों का नेता बनने के अपने असफल प्रयास के कारण अपना जन्मसिद्ध अधिकार खो दिया। जब राहेल की मृत्यु हो गई, तो उसने उसकी दासी बिल्हा को अपनी दासी बनाने की कोशिश की, जिससे उसे संपत्ति के अधिकार और जन्मसिद्ध अधिकार का दर्जा मिल जाता, जबकि यहूदा अभी भी जीवित था।

और यह कुछ ऐसा था जो बहुत ही अपमानजनक था। उत्पत्ति में, कथा में, और फिर अध्याय 49 में कविता में संदर्भित, यहूदा रूबेन के जनजातियों का नेता बनने के आक्रामक और गलत प्रयास के बारे में बहुत जागरूक था। फिर वह यूसुफ के बारे में बात करने के लिए आता है।

अब, यूसुफ़ इस मायने में बहुत महत्वपूर्ण है कि, कुछ अर्थों में, यूसुफ़ को इसहाक से जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त होता है। आपको उत्पत्ति 48 में एप्रैम और मनश्शे का आशीर्वाद याद होगा, और इसहाक ने उन्हें, संक्षेप में, अपने परिवार के वारिस के रूप में नामित किया। इसलिए, उनके पास ज्येष्ठ पुत्र का अधिकार है।

जैसा कि हम यहूदा, एप्रैम और मनश्शे के गोत्रों का परीक्षण करके देखेंगे, उनके पास ज्येष्ठ पुत्र का अधिकार है - जन्मसिद्ध अधिकार - और वे ऐतिहासिक इस्राएल में अब तक का सबसे प्रमुख क्षेत्र हैं।

इतिहासकार इसे स्वीकार करता है। फिर वह इसे उत्पत्ति से लेता है, यह देखते हुए कि यह यूसुफ को जन्मसिद्ध अधिकार देने में इसहाक का दृढ़ संकल्प था। बेशक, यह उसके बेटों, एप्रैम और मनश्शे के माध्यम से हुआ।

लेकिन प्रमुख जनजाति यहूदा बन जाती है। प्रमुख जनजाति यहूदा बन जाती है। और यह यूसुफ को भाइयों को बेचे जाने की कहानी में देखा जाता है।

आपको याद होगा कि यूसुफ को गड्डे में फेंक दिया गया था और मरने के लिए छोड़ दिया गया था, और फिर भाइयों ने उसे एक कारवां समूह को भाड़े के सैनिकों के रूप में बेच दिया ताकि उसे मिस्र में गुलाम बना सकें। यह कुछ ऐसा था जो यहूदा के निर्देशों के बिल्कुल विपरीत था। और उस बिंदु से आगे पूरी कहानी में, यहूदा वास्तव में वह है जो भाइयों का नेता बन जाता है।

इतिहासकार इसे यह कहने के लिए अपने आधार के रूप में उपयोग करता है कि परमेश्वर ने यहूदा को, जिसके वंशज दाऊद हैं, शासक जनजाति और वादे की पूर्ति के रूप में नियुक्त किया। तो, फिर वह जनजातियों के बारे में बात करता है। वह जॉर्डन के पूर्वी किनारे पर जनजातियों के बारे में भी बात करता है।

रूबेन के बेटे और फिर गाद के बेटे। बाशान और गिलाद में गाद के बेटों के बारे में बात करते हुए, वह फिर से विस्तार के युद्ध की बात करता है। यह एकमात्र जगह है जहाँ हम इसके बारे में जानते हैं।

पूर्व में हगरी नामक एक निश्चित समूह था, जो इश्माएल के वंशज थे। इसलिए, अनिवार्य रूप से, ये जनजातियाँ रेगिस्तान की ओर पूर्व की ओर अपना क्षेत्र बढ़ा रही थीं। और फिर बाशान में मनश्शे की जनजाति है।

और फिर वह इस्राएल के इन कबीलों के निर्वासन के विवरण के साथ समाप्त होता है। अब यहाँ हमारे लिए उन स्थानों के संदर्भ में थोड़ा भूगोल जानना उपयोगी होगा जहाँ ये लोग हैं। क्योंकि इतिहासकार जिस तरह से इसे समझाते हैं वह बिल्कुल वैसा नहीं है जैसा आप इसे औसत मानचित्र पर देख सकते हैं।

अगर आप यहाँ इस नक्शे को देखें, तो आप देख सकते हैं कि मनश्शे के पास सबसे बड़ा क्षेत्र है। और इसका एक बड़ा हिस्सा यहाँ जॉर्डन नदी के पूर्वी किनारे पर है। लेकिन हम देखते हैं कि गाद को हम दक्षिण में ज़्यादा रखते हैं, और रूबेन को दक्षिण में ज़्यादा।

इसलिए, इतिहासकार कहते हैं कि गाद के पास बाशान के क्षेत्र तक के सभी इलाके थे। और फिर वह मनश्शे का नाम लेते हैं, जिसके पास उत्तर की ओर पहाड़ों तक के सभी इलाके थे जो यरदन नदी के स्रोत हैं। हालाँकि, यह मूल बात बताता है कि एप्राइम और मनश्शे अब तक इसराइल में प्रमुख जनजातियाँ हैं।

वे ही हैं जिनके पास जन्मसिद्ध अधिकार है। और रूबेन के अन्य गोत्र वास्तव में यहाँ नीचे हैं, अर्नोन के उत्तर में और फिर गाद जहाँ रूबेन था, उसके उत्तर में थोड़ा सा। और यह उनका क्षेत्र बन जाता है।

जब वे पूर्व की ओर बढ़ते हैं, तो निश्चित रूप से, वे उस दिशा में रेगिस्तान की ओर बढ़ रहे होते हैं। तो यह जनजातियों के भूगोल और उनके स्थान के बारे में थोड़ा-बहुत है। तो यह हमें ट्रांस-जॉर्डन जनजातियों की इतिहासकार की कहानी और उनके निर्वासन में समाप्त होने के तरीके पर वापस लाता है।

इसलिए, इतिहासकार उत्तर के निर्वासन के बारे में बहुत जागरूक है, लेकिन वह सरगोन द्वितीय द्वारा निर्वासित किए जाने के बाद उन जनजातियों के निरंतर इतिहास को बहुत महत्वपूर्ण नहीं मानता है। यहीं पर वह उस विवरण को छोड़ देता है।

यह डॉ. ऑगस्ट कोंकेल और इतिहास की पुस्तकों पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 4 है, यहूदा का शेर।